❁ 16 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बच्चे, घर चलने के पहले जीते जी मरना है, इसलिए बाबा तुम्हें पहले से ही देह के भान से परे ले जाने का अभ्यास कराते हैं अर्थात् मरना सिखलाते हैं। ऊपर जाना माना मरना। जाने और आने का ज्ञान अभी तुम्हें मिला है। तुम जानते हो हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाने। हम असुल के रहने वाले हैं, अभी वहाँ ही वापिस जाना है।

2] विनाश के समय सब ईश्वर को याद करते हैं। समझो बाढ़ हुई तो भी जो भक्त होंगे वह भगवान को ही याद करेंगे परन्तु उस समय भगवान की याद आ नहीं सकती। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत ही याद आ जाता है। भल 'हे भगवान' कहते हैं परन्तु वह भी कहते मात्र।

3] हम स्वर्ग में जाने के लिए खुद ही पुरूषार्थ कर शरीर छोड़ देते हैं। बाप को ही याद करते रहना है तो अन्त मती सो गति हो जाए, इसमें मेहनत हैं।

4] अब फिर तुम सतयुगी देवता बनने आये हो। एम ऑबजेक्ट कितनी सहज है। त्रिमूर्ति में क्लीयर है। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि के चित्र न हों तो हम समझा कैसे सकते। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा की 8 भुजा, 100 भुजा दिखाते हैं क्योंकि ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे होते हैं। तो उन्होंने फिर वह चित्र बना दिय है। बाकी मनुष्य कोई इतनी भुजाओं वाला होता थोड़ेही है। रावण 10 शीश का भी अर्थ है, ऐसा मनुष्य होता नहीं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं, मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं। यह भी खेल है, यह कोई को पता नहीं है कि यह कब से शुरू हुआ है। परम्परा कह देते हैं। अरे, वह भी कब से? तो मीठे-मीठे बच्चों को बाप पढ़ाते हैं, वह टीचर भी है तो गुरू भी है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।

5] सब तो नर से नारायण नहीं बनेंगे, प्रजा भी तो चाहिए। कथा भी होती है सत्य नारायण की। वो लोग कथा सुनाते हैं, परन्तु बुद्धि में कुछ भी नही आता।

6] दृढ़ता की शक्ति श्रेष्ठ शक्ति है जो अलबेलेपन की शक्ति को सहज परिवर्तन कर देती है।

✺ योग-

1] अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है, घुटका नहीं खाना है। इसको कहा जाता है सहज याद। पहले-पहले अपने को आत्मा ही समझना है। आत्मा ही शरीर धारण पार्ट बजाती है। संस्कार भी सब आत्मा में ही रहते हैं आत्मा तो इन्डिपेन्डेन्य है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह नॉलेज अभी ही तुमको मिलती है, फिर नहीं मिलेगी। तुम्हारा यह शान्त में बैठना दुनिया नहीं जानती, इसको कहा जाता है नैचुरल शान्ति।

2] पवित्र होने के लिए परमात्मा बाप को याद करना है। याद करते-करते पाप मिट जायेंगे। तकलीफ की कोई बात ही नहीं। तुम पैदल करने जाते हो तो बाप की याद में रहो। अभी ही याद से पवित्र बन सकते हो।

3] यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है, बैटरी कैसे चार्ज करनी है। भल घूमो फिरो, बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे।

✺ 16 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम पवित्र बनने के बिगर वापिस जा नहीं सकते इसलिए बाप की याद से आत्मा की बैटरी को चार्ज करो और नैचुरल पवित्र बनो।

2] राधे-कृष्ण आदि भी मनुष्य हैं, परन्तु दैवी गुणों वाले। अभी तुमको ऐसा बनना है। दूसरे जन्म में देवता बन जायेंगे। 84 जन्मों का जो हिसाब-किताब था वह अब पूरा हुआ। फिर रिपीट होगा। अब तुमको यह शिक्षा मिल रही है।

3] बाप कहते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा निश्चय करो।

4] बापदादा का वरदान है– जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही। सिर्फ जैसा समय, वैसी विधि से सिद्धि स्वरूप बनो। कोई भी कर्म करने के पहले उसके आदि-मध्य-अन्त को सोच-समझकर कार्य करो और कराओ अर्थात् त्रिकालदर्शी आसनधारी बनो तो अलबेलापन समाप्त हो जायेगा। संकल्प रूपी बीज शक्तिशाली दृढ़ता सम्पन्न हो तो वाणी और कर्म में सहज सफलता है ही।

✺ सेवा-

1] तुम बच्चे समझते हो वह है शान्तिधाम, निराकारी दुनिया। फिर वहाँ से जायेंगे सुखधाम। सुखधाम में ले जाने वाला एक ही बाप है। तुम कोई को समझाओ, बोलो अभी वापिस घर जायेंगे। आत्मा को अपने घर तो अशरीरी बाप ही ले जायेंगे।